What Shall I Write (1)?

What Shall I Write?
This evening is different-
Very fuzzy, like shadow,
The sky, river, leaves of the tree are swinging gently,
Somewhere far, the Tagore's tunes are playing softly-
The mesmerized mind is telling to write something more;

Or maybe I'll write something else today as well.
The month of May, 2020-
The working India, the poor India is walking during the lockdown-
Returning from workplace to home,
From Delhi to Bihar,
From Andhra to Assam,
From Lucknow they will walk till Midnapur.
They will walk for 1,500 kilometres!
The working India, the poor India is walking.
The mother with the child on the lap, the father with the son on the lap.
Thousands of people are walking-
After walking for the whole day, at night on the roadside
The whole family has slept off.
In the fifth day,
The child on the lap passed away-
What shall I write?

Finishing the last rites of the dead child,
The parents and the son are crying with a throbbing chest.
Still they didn't stop walking -
So many children,
Such thousands of mothers' bones,
Or the honor,
Has been devoured by the roadside eagles and vultures-
Did anybody keep a track?
Nobody kept a track;
What shall I write?

Twenty people were walking along the railway track-

They walk the whole day, at night they sleep off on the rail lines.
Everyday they get up and start walking.
One night, they got crushed off in sleep
By the labour special train-
None of the twenty woke up-
Not even with the intense light and horn of the suddenly arriving train.
I saw the tv news the next morning,
The dead bodies lying on the rail line,
And,
Here and there scattered the bread soaked in blood;
What shall I write?

On one side, the sky, fuzzy river,
The leaves are still swinging gently-
The rainy cool breeze is soothing the body.
On the other side,
Lying scattered the cut hands and heads
On the both sides of the rail line-
The heart is wailing so deep :
I'm thinking for the whole evening,
What shall I write ?

কি লিখব আমি (1)

(1)

কি লিখব আমি?

এই সময়টা অন্যরকম

অবস্থা কেমন ছায়া ছায়া

আকাশ নদী সাগরের মাঝে ফুলের সুর

রবিঠাকুরের গান বাজছে দূর কোথাও

উদাস করা মনটা বলছে লিখব আরো.....

নাকি লিখব আজকে অন্য কিছু.....

~~জুন~~ মে মাস 2020,

লকডাউনে শ্রমিক থেকে নারী থেকে বৃদ্ধ হাঁটছে।

ফিরছে কাজের ঠিকানা থেকে ঘরের ঠিকানায়।

দিল্লী থেকে বিহার,

অন্ধ্র থেকে আসাম,

লক্ষ্ণৌ থেকে মেদিনীপুর যাবে বাড়ি হেঁটে।

বারোশো কিলোমিটার বৃদ্ধ হাঁটবে।

(২)

এদিক থেকে, ওদিক থেকে বন্যা হাঁটছে।
কোলে বাচ্চা নিয়ে মা, কাঁধে ছেলে নিয়ে বাবা
হাজার হাজার মানুষ বন্যা হাঁটছে।।
সারাদিন বন্যা হেঁটে রাতে রাস্তায় শুয়ে
ঘুমিয়ে পড়েছে গোটা পরিবার।,
পাঁচ দিনের দিন ঘুমের মধ্যে
মারা গেছে কোলের শিশু।
কি লিখব তোমায়?
শুধু শিশুকে সৎকার করে
বাবা মা ছেলে বুক চাপড়ে কাঁদছে
তবু বন্যা হাঁটা থামে নি।,
কত শত সন্তান
কত হাজার মানুষের হাড়গোড়

[illegible]

খবরটা ছিল শহরে ছড়িয়ে গেছে!
কেউ কি শিখেছে গেয়েছে?
কেউ শিখেছে রাখেনি।
কি শিখেছে তারা?
রেললাইন ধরে বসে হাঁটছিল জনা কুড়ি
সারাদিন হাঁটে, রাতে ঘুমিয়ে পড়ে রেললাইনের উপর।
রোজ সকালে ঘুম ভাঙে, বসে হাঁটে।
একদিন রাতে ঘুমের মধ্যে দিয়ে গেল
শ্রমিক স্পেশাল ট্রেন।
কুড়ি জনের একজনেরও ঘুম ভাঙেনি
শুধু গুঁড়িয়ে গেল ট্রেনের তীব্র লাইট আর হর্ন এতে।
পরের দিন সকালবেলায় টিভিতে নিউজ চ্যানেলে
রেললাইনে পড়ে থাকা দেহ
আর

(A)

এদিক ওদিক উড়িয়ে দিল রঙ আর তুলি।
কি লিখব আমি?
একপাশে আকাশ নদী আঁকা বাঁকা
[illegible] বাড়ি ইচ্ছে ঘুঁড়ি খেলতে
পাতারা ছড়িয়ে আছে বর্ষার হিমেল বাতাসে
ওইপাশে

কাটা হাত ~~[illegible]~~, কাটা আশা উড়িয়ে ছিটিয়ে আছে
পেন্সিলের ~~[illegible]~~ এপাশে ওপাশে
বুকে খোঁচড় দিচ্ছে কান্না
কি লিখব আমি ভাবছি গোটা সন্ধ্যেবেলা।

..क्या लिखूं मैं ?(1)

ये शाम कुछ अजीब सी है।

कुछ धुंधली ,कुछ उदास सी।

धीरे धीरे डोलते हैं नदी-आसमान,पेड़ के पत्ते,

दूर कहीं बजते हैं रवीन्द्रनाथ के गीत,

ऐ मन उदास,कहता है कुछ और लिख,

या आज भी लिखूं कुछ और। ....

मई,२०२० ,

लॉकडाउन में मजदूर भारत,गरीब भारत पैदल चल रहा है।

श्रमिक-मजदूर प्रवास से अपने घरों को वापस लौट रहे हैं।

दिल्ली से बिहार,

आंध्र से असम,

लखनऊ से मिदनापुर पहुंचेंगे सिर्फ पैरों से चलकर,

पंद्रहसौ किलोमीटर राह चलेंगे।

पैदल चलता है मजदूर भारत,गरीब भारत।

गोद में बच्चे को लेकर माँ,कंधे पर बेटे को लेकर बाप,

चलेंगे हज़ारों मील।

दिनभर पैदल चलकर,थके हारे

सड़क किनारे सो गया है पूरा परिवार,

पांचवे दिन नींद में ही,गोद का बच्चा मर गया।

क्या लिखूं मैं ?

मृत शिशु का अंतिम संस्कार कर,

जोर जोर से चीख रहे हैं माँ-बाप और बेटे।

फिर भी राह चलना नहीं रुका।

कितने कितने बच्चों को,

कितने हज़ार माओं की हड्डियों को

या लज्जा को,

सड़क के किनारे चील और गिद्ध नोचकर खा रहे हैं।

क्या किसी को खबर है,

किसी को खबर नहीं।

क्या लिखूं मैं ?

लगभग बीस जन रेललाइन के बगल/किनारे से गुज़र रहे थे,

दिनभर चलते हैं,रात को थककर सो जाते हैं रेललाइन के ऊपर ही।

रोज़ सुबह आँखें खुलती हैं,फिर चलते हैं।

फिर एक दिन रात को उन्हें कुचल देती है,

श्रमिक स्पेशल ट्रैन।

बीसों में एक की भी नींद नहीं टूटी,

तेज़ रफ़्तार से आती हुई ट्रैन की तेज लाइट और हॉर्न से भी,

अगले दिन सुबह टीवी में समाचार देखा,

रेल लाइन के ऊपर पड़ी हुई शव ,

और,

इधर उधर बिखरी थी खून से लथपथ रोटियां,

क्या लिखूं मैं ?

एक तरफ नदी आसमान,हल्की छांव,

मंद पवन में पत्ते हिल रहे हैं,

बरसात की हिमभरी हवाएं,

तन को मानो छू लेती हैं।

दूसरी तरफ,

कटे हाथ,कटे सर,चारों तरफ बिखरे हुए,

रेललाइन के इस पार से उस पार,

सीने को चीरता है रुदन,

क्या लिखूं मैं इसी सोच में हूँ सारी शाम।